बाइबल सर्वेक्षण–भाग 1 – परमेश्वर के वचनों का अर्थात् सभी 66 पुस्तकों का अवलोकन

बच्चों के शिक्षक कृपया पढ़े अध्ययन नम्बर बी 3 बी

1. **बाइबल के सभी अंशों का अवलोकन करें व बुद्धिमानी के साथ जीवन में व्यवहारिक रूप दें।**

प्रार्थना: हे परमेश्वर पवित्रात्मा, आपके वचनों के विभिन्न अंशों को समझने में सहायक हों ताकि मैं आपके झुण्ड में वचनों को लागू करने में सहायता करने योग्य बन सकूँ ।

(अ) बाइबल के संबंध में कुछ तथ्य :

- बाइबल दो भागों में परमेश्वर का संदेश है। प्रथम भाग पुराना नियम कहलाता है, जिसमें 39 पुस्तकें हैं, जो प्राचीन इब्रानी व आरामी (इब्रानी के समान सीरियाई भाषा) भाषा में लिखा गया था। नये नियम में 27 पुस्तकें पाई जाती हैं जो यूनानी भाषा में रचा गया।

- पुराने नियम ने इस्राएलियों को यीशु के आगमन के लिये तैयार किया। पुराने नियम ने कुछ मूल आध्यात्मिक धारणाओं को स्पष्ट किया कि वे लोग परमेश्वर के पवित्र नियमों का पालन अपनी स्वयं की सामर्थ व प्रयत्न से कदापि नहीं कर सकते हैं।
- नया नियम यीशु के जीवन–चरित्र व कार्यो का तथा उनके प्रथम शिष्यों के कार्यो का लेखा–जोखा है।

(ब) नये व पुराने नियमों में साहित्यिक शैली :

पुराना नियम

- वाचा का आधार, संसार का आरम्भ, प्राचीन पुरखों का इतिहास, परमेश्वर की प्राचीन व्यवस्था, मूसा की पांच पुस्तकें, उत्पत्ति से व्यवस्था–विवरण।
- ऐतिहासिक साहित्य : इस्राएल जाति के विषय वृतान्त, 12 पुस्तकें, यहोशु से ऐस्तर तक।
- भक्ति व निर्देशात्मक साहित्य: इब्रानी काव्य, अय्युब से श्रेष्ठगीत तक।
- भविष्यवाणी संबंधी साहित्य: पुराने नियम के साहित्यकार भविष्यद्वक्ता, 17 पुस्तकें, यशायाह से मलाकी तक।

गिनती 12:6-8 में ज्ञात करें कि परमेश्वर ने मूसा से किस प्रकार बातें कीं।

व्यवस्था–विवरण 34:10 में ज्ञात करें कि परमेश्वर ने मूसा की तुलना अन्य नबियों से किस प्रकार की।

यूहन्ना 1:17 में ज्ञात करें कि किस प्रकार परमेश्वर ने मूसा की तुलना यीशु से की। मूसा पुराने नियम का एक महानतम भविष्यद्वक्ता था। अन्य लेखक–भविष्यद्वक्ताओं ने मूसा की व्यवस्था का पालन किया तथा उसकी केवल व्याख्या ही की।

नया नियम

- वाचा का आधार। यीशु की शिक्षा व सेवकाई, 4 पुस्तकें, मत्ती से यूहन्ना तक।
- इतिहास संबंधी। प्रेरितिक कलीसियाएं, 1 पुस्तक, प्रेरितों के काम।
- भक्ति व निर्देशात्मक। नई कलीसियाओं व अगुवों को पत्र, रोमियों नामक पुस्तक से यहूदा तक।

- भविष्यवाणी। यूहन्ना प्रेरित के दर्शन, 1 पुस्तक, प्रकाशितवाक्य।

(स) बाइबल की पांच "वाचाएं" जिनसे मानव के प्रति परमेश्वर के व्यवहार का ज्ञान मिलता है।

1) विवेक के आधार पर आत्म-शासन की वाचा जो आदम के साथ बांधी गई, यह आदम से अब्राहम तक रही, उत्पत्ति अध्याय 1 से 12 तक।

उद्‌गम। परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य आदम से कहा था, तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है, पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा। शैतान ने झूठे धर्म की बात कही, तुम निश्चय न मरोगे, वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। (उत्पत्ति 2:16-17 तथा 3:5।

परिणाम: आदम के आज्ञाउल्लंघन करने के बाद लोग भले बुरे का ज्ञान रखने लगे। संपूर्ण बाइबल की हर पीढ़ी में मानव जाति से शैतान की यही अपेक्षा रही कि मानवजाति स्वयं अपने प्रयत्न से सि)ता प्राप्त करे, अत: जब लोग सि)ता प्राप्त न कर सके तो न्याय के आधीन हुए और मृत्यु द्वारा नाश हुए, किन्तु परमेश्वर ने बहुधा ऐसे लोगों का, जैसे हाबिल, जिसने परमेश्वर को निर्दोष रक्त की भेंट चढ़ाई थी, उद्धार किया जो उस पर विश्वास व भरोसा रखते थे। जल-प्रलय के पश्चात् परमेश्वर ने मानव-हत्या को निषि) और हत्यारे का दंड मृत्यु ठहराया। (उत्पत्ति 9:6)।

उत्पत्ति 2:16-17 में ज्ञात करें कि परमेश्वर ने आदम से आज्ञा-उल्लंघन के परिणाम के विषय क्या कहा था?

2) अनुग्रह की वाचा, जिसे उत्पत्ति 12 अध्याय में परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बांधी थी, संपूर्ण बाइबल में चरितार्थ होती है।

इस वाचा का आरम्भ: अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया, और परमेश्वर ने उसके विश्वास को उसके लेखे में धार्मिकता गिना। (उत्पत्ति 12:1-3 तथा 15:1-6)।

परिणाम: परमेश्वर अब्राहम के वंशज प्रभु यीशु द्वारा भूमण्डल की प्रत्येक मानवजाति को आशिषित करता है।

- पुराना और नया नियम इसी वाचा पर आधारित हैं तथा इसी वाचा की पूर्ति हैं, जो अब्राहम के साथ बांधी गई।
- नया व पुराना दोनों नियमों में परमेश्वर ने अपने अदभुत अनुग्रह से मनुष्यों को उद्धार दिया।

3) पुराने नियम में व्यवस्था पालन निर्गमन 20 अध्याय से आरम्भ करके अंत तक पाया जाता है।

इसका आरम्भ: परमेश्वर ने पुराने नियम की व्यवस्था सीनै पर्वत पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दी।

परिणाम: प्रभु यीशु मसीह को छोड़कर, कोई व्यक्ति भी इस व्यवस्था का पूर्णरूप से पालन नहीं कर सका। पाप अनन्त जीवन नहीं परन्तु मृत्यु लाता है। मूसा की व्यवस्था में केवल पृथ्वी की व अस्थाई प्रतिफल की प्रतिज्ञाएं पाई जाती हैं। व्यवस्था से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को क्षमादान की आवश्यकता है।

- परमेश्वर ने अदभुत रीति से इस्राएल जाति को मिश्र के दासत्व से छुड़ाया और इस्राएल एक राष्ट्र बना जो परमेश्वर द्वारा छुड़ाए हुए लोग कहलाए।
- नव-निर्मित स्वतन्त्र राष्ट् जो जंगलों में भटक रहा था, एक अच्छे शासन के लिये नियमों की आवश्यकता पड़ी। (निर्गमन की पुस्तक अध्याय 18 से 20)।

4) आने वाले मसीह की वाचा जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ बांधी, इसका वर्णन हम पाते हैं, 2 शामूएल 7:8-17 में।

इसका आरम्भ: परमेश्वर ने राजा दाऊद से वाचा बांधी थी कि उसका एक वंशज न्याय व धार्मिकता से सदैव तक राज्य करेगा। शब्द 'मसीह' का अर्थ है ऐसा जन जो परमेश्वर के पवित्रात्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया हो।

परिणाम: राजा दाऊद के अभिषिक्त वंशज प्रभु यीशु मसीह ने नये व पुराने नियम की सभी वाचाओं को पूर्णत: पूरा किया। बाइबल में प्रभु यीशु मसीह तथा दाऊद का जितना वर्णन पाया जाता है, उतना किसी अन्य का नहीं।

यशायाह 9:6-7 पढ़ें तथा पता लगाएं कि परमेश्वर किसके सिंहासन पर अपना अनन्त राज्य स्थापित करेगा? (परमेश्वर ने यशायाह पर यह बात दाऊद से सैकड़ों वर्ष बाद तथा प्रभु यीशु से सैकड़ों वर्ष पूर्व प्रकट की थी)

मत्ती 3:16-17 पढ़ें व खोजें कि चेलों ने क्या देखा जिससे यह प्रमाणित होता है कि यीशु परमेश्वर की ओर से भेजे गये विशेष जन थे।

5) नई वाचा, जो प्रत्येक विश्वासी के साथ बांधी गई है, और जो सि) और अनन्त राज्य की वाचा है और जिसका वर्णन प्राय: नए नियम की प्रत्येक पुस्तक में पाया जाता है।

आरम्भ: प्रभु यीशु मसीह ने विधिवत् नई वाचा की घोषणा की जबकि उन्होंने अंतिम भोज का आयोजन किया था। यीशु ने अपनी मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण तथा पवित्रात्मा को हमारे जीवनों में निवास करने के लिये भेजने के द्वारा इसे दृढ़ किया।

परिणाम: वह प्रत्येक जन जो पापों से पश्चात्ताप करता तथा प्रभु यीशु पर विश्वास करता है, वह परमेश्वर के अनन्त राज्य में नया जन्म प्राप्त करता है, विश्वासी जन मसीह की रहस्यमयी विश्वव्यापी देह का अंग बन जाता है। यीशु के बहाए हुए रक्त के कारण उन्हें पापों की क्षमा मिलती है, यीशु की मृत्यु व पुनरूत्थान में सहभागी होने के कारण उन्हें नया, पवित्र अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

पढ़ें यिर्मयाह 31:31-34 व खोजें कि नई वाचा के अर्न्तगत लोगों किस प्रकार मार्गदर्शन किया जाएगा।

पढ़ें यिर्मयाह 36 अध्याय व खोजें कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने वचन को लिखवाने में लोगों को व घटनाओं को प्रयोग किया?

2. अपने सहयोगियों के साथ सप्ताह के मध्य कार्य करने की योजना बनाएं

- किसी भी ऐसे विश्वासी से भेंट करें जो अभी तक न तो प्रतिदिन अपने परिवार में बाइबल पढ़ता है और न ही प्रार्थना करता है, उसके साथ मिलकर बाइबल अध्ययन व प्रार्थना कीजिए तथा सहायता कीजिए कि वह शीघ्र यह क्रिया आरम्भ कर सके।
- यदि अभी तक बाइबल उनकी भाषा में अनुवादित नहीं हुई है या वे अनपढ़ हैं, तो उनसे भेंट कीजिये और उन्हें बाइबल के वृतान्त सुनाईए ताकि वे अपने परिवारों व मित्रों को वे बातें बताने योग्य बन सकें।

3. आने वाली आराधना सभा की योजना बनाएं व तैयारी करें

यिर्मयाह 36 पर आधारित यिर्मयाह की पुस्तक पर नाटक करें या संपूर्ण वृतान्त सुनाएं।

पांच वाचाओं को समझाएं, उनके आरम्भ, परिणाम तथा वाचाओं के मुख्य विचारों को प्रस्तुत करें।

जो कविताएं, नाटक, प्रश्नोत्तरी आदि बच्चों ने तैयार की हो, प्रस्तुत करने का आवेदन कीजिये।

प्रभु-भोज विधि संपन्न करने से पहले लोगों को समझाएं कि आदम-हव्वा से लेकर संपूर्ण बाइबल के अन्त तक किस प्रकार परमेश्वर पापों की क्षमा के लिये निर्दोष पशु के बलिदान के रक्त की मांग करता रहा है। जब हम प्रभु-भोज में प्रभु यीशु की देह व रक्त में सहभागी होते हैं तो इस मूलभूत तथ्य का स्मरण करते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:16

जो योजनाएं बन चुकी हों उसकी सूचना दीजिए ।

2 या 3 जनों के समूहों में प्रार्थनाएं कीजिये ।

कंठस्थ कीजिये : 2 तीमुथियुस 2:15 जो वचन को उचित रूप से प्रयोग करने के विषय में है।